तत्त्वार्थसूत्र

परिचय - पुनरावर्तन

मूलसूत्र

हितोपदेशी — वीतरागी

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम् ।
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये ॥

सर्वज्ञ — प्रयोजन - भावना

आगे की विषय-वस्तु....

विषय-वस्तु	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
अवधिज्ञान का वर्णन	२१	१
क्षयोपशम निमित्तक अवधिज्ञान के भेद तथा उनके स्वामी	२२	१
मन:पर्ययज्ञान के भेद	२३	१
ऋजुमति और विपुलमति में अंतर	२४	१
अवधिज्ञान और मन:पर्ययज्ञान में विशेषता	२५	१
मति , श्रुत , अवधि , मन:पर्यय , केवलज्ञान का विषय	२६-२९	४
एक जीव के एक साथ कितने ज्ञान हो सकते हैं ?	३०	१

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र २१ , २२

अवधिज्ञान का वर्णन

भवप्रत्ययोऽवधिर्देवनारकाणाम् ॥ २१ ॥

अर्थ - [भवप्रत्ययः] भवप्रत्यय नामक [अवधिः] अवधिज्ञान [देवनारकाणाम्] देव और नारकियों के होता है।

अध्याय १: सूत्र २१ - अवधिज्ञान का वर्णन

भवप्रत्ययोऽवधिर्देवनारकाणाम् ॥ २१ ॥ - अवधिज्ञान के भेद

- अवधिज्ञान के दो भेद हैं (१) भवप्रत्यय, (२) गुणप्रत्यय।
- प्रत्यय, कारण और निमित्त तीनों एकार्थ वाचक शब्द हैं।
- यहाँ 'भवप्रत्यय' शब्द बाह्य निमित्त की अपेक्षा से कहा है, अन्तरङ्ग निमित्त तो प्रत्येक प्रकार के अवधिज्ञान में अवधिज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम होता है।

भवप्रत्ययोऽवधिर्देवनारकाणाम् ॥ २१ ॥ - भवप्रत्यय अवधिज्ञान का स्वरूप

- देव और नारक पर्याय के धारण करने पर जीव को जो अवधिज्ञान उत्पन्न होता है, वह भवप्रत्यय कहलाता है।
- जैसे पक्षियों में जन्म का होना ही आकाश में गमन का निमित्त होता है, न कि शिक्षा, उपदेश, जप-तप इत्यादि। इसी प्रकार नारकी और देव की पर्याय में उत्पत्ति मात्र से अवधिज्ञान प्राप्त होता है।

भवप्रत्ययोऽवधिर्देवनारकाणाम् ॥ २१ ॥ - भवप्रत्यय अवधिज्ञान का स्वरूप

- यहाँ सम्यग्ज्ञान का विषय है, फिर भी सम्यक् या मिथ्या का भेद किए बिना सामान्य अवधिज्ञान के लिए 'भवप्रत्यय' शब्द दिया गया है।
- भवप्रत्यय अवधिज्ञान देव, नारकी तथा तीर्थङ्करों के (गृहस्थदशा में) होता है, वह नियम से देशावधि होता है। वह समस्त प्रदेश से उत्पन्न होता है।

भवप्रत्ययोऽवधिर्देवनारकाणाम् ॥ २१ ॥ - गुणप्रत्यय अवधिज्ञान का स्वरूप

- 'गुणप्रत्यय' - किसी विशेष पर्याय (भव) की अपेक्षा न करके जीव के पुरुषार्थ द्वारा जो अवधिज्ञान उत्पन्न होता है, वह गुणप्रत्यय अथवा क्षयोपशमनिमित्तक कहलाता है

क्षयोपशमनिमित्तक अवधिज्ञान के भेद तथा उनके स्वामी

क्षयोपशमनिमित्त: षड्विकल्प: शेषाणाम् ॥ २२ ॥

अर्थ - [क्षयोपशमनिमित्तः] क्षयोपशमनैमित्तिक अवधिज्ञान [षडविकल्पः] अनुगामी, अननुगामी, वर्धमान, हीयमान, अवस्थित और अनवस्थित - ऐसे छह भेदवाला है, और वह [शेषाणाम्] मनुष्य तथा तिर्यञ्चों के होता है।

अध्याय १: सूत्र २२ - क्षयोपशमनिमित्तक अवधिज्ञान के भेद तथा उनके स्वामी

क्षयोपशमनिमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम ॥ २२ ॥ - क्षयोपशमनिमित्तक अवधिज्ञान के भेद

- यह अवधिज्ञान मनुष्यों को होता है, ऐसा कहा गया है। इसमें तीर्थङ्करों को नहीं लेना चाहिए, उनके अतिरिक्त अन्य मनुष्यों को समझना चाहिए, वह भी बहुत थोड़े से मनुष्यों को होता है। इस अवधिज्ञान को 'गुणप्रत्यय' भी कहा जाता है।
- वह नाभि के ऊपर शंख, पद्म, वज्र, स्वस्तिक, कलश, मछली आदि शुभ चिह्नों के द्वारा होता है।

अध्याय १: सूत्र २१ ओर २२ का सार

- अवधिज्ञान
  - भवप्रत्यय
    - देव , नारक और तीर्थंकर पर्याय के जीव
      - देशावधि - सर्व प्रदेशों से होता है
  - गुणप्रत्यय
    - मनुष्य और संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच
      - भेद-प्रभेद - नाभि के उपर के प्रदेशों से होता है

अध्याय १: सूत्र २२ - क्षयोपशमनिमित्तक अवधिज्ञान के भेद तथा उनके स्वामी

क्षयोपशमनिमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम ॥ २२ ॥ - क्षयोपशमनिमित्तक अवधिज्ञान के भेद

क्षयोपशमनिमित्तक [गुणप्रत्यय] अवधिज्ञान के भेद-प्रभेद	
प्रकार १	प्रकार २
अनुगामी - अननुगामी	देशावधि
वर्धमान - हीयमान	परमावधि
अवस्थित - अनवस्थित	सर्वावधि
प्रतिपाति [१] - अप्रतिपाति [२]	

[१] प्रतिपाति - जो गिर जाता है। [२] अप्रतिपाति - जो नहीं गिरता।

अध्याय १: सूत्र २२ - क्षयोपशमनिमित्तक अवधिज्ञान के भेद तथा उनके स्वामी

क्षयोपशमनिमित्त: षड्विकल्प: शेषाणाम ॥ २२ ॥ - क्षयोपशमनिमित्तक अवधिज्ञान के भेद

- **अनुगामी** – जो अवधिज्ञान सूर्य के प्रकाश की भाँति जीव के साथ ही साथ जाता है, उसे अनुगामी कहते हैं।
- **अननुगामी** – जो अवधिज्ञान जीव के साथ ही साथ नहीं जाता, उसे अननुगामी कहते हैं।
- **वर्धमान** – जो अवधिज्ञान शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा की कला की भाँति बढ़ता रहे, उसे वर्धमान कहते हैं।

अध्याय १: सूत्र २२ - क्षयोपशमनिमित्तक अवधिज्ञान के भेद तथा उनके स्वामी

क्षयोपशमनिमित्त: षड्विकल्प: शेषाणाम ॥ २२ ॥ - क्षयोपशमनिमित्तक अवधिज्ञान के भेद

- **हीयमान** – जो अवधिज्ञान कृष्ण पक्ष के चन्द्रमा की कला की तरह घटता रहे, उसे हीयमान कहते हैं।
- **अवस्थित** – जो अवधिज्ञान एक-सा रहे, न घटे न बढ़े, उसे अवस्थित कहते हैं।
- **अनवस्थित** – जो पानी की तरङ्गों की भाँति घटता-बढ़ता रहे, एक-सा न रहे, उसे अनवस्थित कहते हैं।

अध्याय १: सूत्र २२ - क्षयोपशमनिमित्तक अवधिज्ञान के भेद तथा उनके स्वामी

क्षयोपशमनिमित्त: षड्विकल्प: शेषाणाम ॥ २२ ॥ - क्षयोपशमनिमित्तक अवधिज्ञान का विषय

- अवधिज्ञान रूपी-पुद्गल तथा उस पुद्गल के सम्बन्धवाले संसारी जीव (के विकारी भाव) को प्रत्यक्ष जानता है।
- देशावधि उपरोक्त छह प्रकार तथा प्रतिपाति और अप्रतिपाति ऐसे आठ प्रकार का होता है।
- परमावधि-अनुगामी, अननुगामी, वर्धमान, अवस्थित, अनवस्थित और अप्रतिपाति होता है।

अध्याय १: सूत्र २२ - क्षयोपशमनिमित्तक अवधिज्ञान के भेद तथा उनके स्वामी

क्षयोपशमनिमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम ॥ २२ ॥ - क्षयोपशमनिमित्तक अवधिज्ञान का विषय

- जघन्य देशावधि संयत तथा असंयत मनुष्यों और तिर्यञ्चों के होता है। (देव-नारकी को नहीं होता)
- उत्कृष्ट देशावधि संयत भावमुनि के ही होता है - अन्य तीर्थङ्करादि गृहस्थ मनुष्य, देव, नारकी के नहीं होता; उनके देशावधि होता है।

अध्याय १: सूत्र २२ - क्षयोपशमनिमित्तक अवधिज्ञान के भेद तथा उनके स्वामी

क्षयोपशमनिमित्त: षड्विकल्प: शेषाणाम ॥ २२ ॥ - क्षयोपशमनिमित्तक अवधिज्ञान का विषय

- द्रव्य अपेक्षा से जघन्य अवधिज्ञान का विषय – एक जीव के औदारिकशरीर सञ्चय के लोकाकाश–प्रदेशप्रमाण खण्ड करने पर उसके एक खण्ड तक का ज्ञान होता है।
- द्रव्यापेक्षा से सर्वावधिज्ञान का विषय – एक परमाणु तक जानता है

  [देखो सूत्र २८ की टीका]
- द्रव्यापेक्षा से मध्यम अवधिज्ञान का विषय – जघन्य और उत्कृष्ट के बीच के द्रव्यों के भेदों को जानता है।

अध्याय १: सूत्र २२ - क्षयोपशमनिमित्तक अवधिज्ञान के भेद तथा उनके स्वामी

क्षयोपशमनिमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम ॥ २२ ॥ - क्षयोपशमनिमित्तक अवधिज्ञान का विषय

- **क्षेत्रापेक्षा से जघन्य अवधिज्ञान का विषय** – उत्सेघाङ्गुल के [आठ यब मध्य के] असंख्यातवें भाग तक के क्षेत्र को जानता है।
- **क्षेत्र अपेक्षा से उत्कृष्ट अवधिज्ञान का विषय** – असंख्यात लोकप्रमाण तक क्षेत्र को जानता है।
- **क्षेत्र अपेक्षा से मध्यम अवधिज्ञान का विषय** – जघन्य और उत्कृष्ट के बीच के क्षेत्र–भेदों को जानता है।

अध्याय १: सूत्र २२ - क्षयोपशमनिमित्तक अवधिज्ञान के भेद तथा उनके स्वामी

क्षयोपशमनिमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम ॥ २२ ॥ - क्षयोपशमनिमित्तक अवधिज्ञान का विषय

- कालापेक्षा से जघन्य अवधिज्ञान का विषय – आवली के असंख्यात भाग प्रमाणभूत और भविष्य को जानता है।
- कालापेक्षा से उत्कृष्ट अवधिज्ञान का विषय – असंख्यात लोकप्रमाण अतीत और अनागत काल को जानता है।
- कालापेक्षा से मध्यम अवधिज्ञान का विषय – जघन्य और उत्कृष्ट के बीच के कालभेदों को जानता है।

क्षयोपशमनिमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम ॥ २२ ॥ - क्षयोपशमनिमित्तक अवधिज्ञान का विषय

- **भाव अपेक्षा से अवधिज्ञान का विषय** – पहिले द्रव्यप्रमाण निरूपण किए गए, द्रव्यों की शक्ति को जानता है।

[श्री धवला पुस्तक १, पृष्ठ ९३-९४]

अध्याय १: सूत्र २२ - क्षयोपशमनिमित्तक अवधिज्ञान के भेद तथा उनके स्वामी

क्षयोपशमनिमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम ॥ २२ ॥ - क्षयोपशमनिमित्तक अवधिज्ञान का कारण

- कर्म का क्षयोपशम निमित्तमात्र है अर्थात् जीव अपने पुरुषार्थ से अपने ज्ञान की विशुद्धि अवधिज्ञानपर्याय को प्रगट करता है, उसमें स्वयं ही कारण है।
- अवधिज्ञान के समय अवधिज्ञानावरण का क्षयोपशम स्वयं होता है, इतना सम्बन्ध बताने को निमित्त बताया है।
- कर्म की उस समय की स्थिति कर्म के अपने कारण से क्षयोपशमरूप होती है, इतना निमित्त–नैमित्तिक सम्बन्ध है। वह यहाँ बताया है।

अध्याय १: सूत्र २२ - क्षयोपशमनिमित्तक अवधिज्ञान के भेद तथा उनके स्वामी

क्षयोपशमनिमित्त: षड्विकल्प: शेषाणाम ॥ २२ ॥ - क्षयोपशमनिमित्तक अवधिज्ञान का कारण

- **क्षयोपशम का अर्थ** - (१) सर्वघातिस्पर्द्धकों का उदयाभावी क्षय, (२) देशघाति-स्पर्द्धकों में गुण का सर्वथा घात करने की शक्ति का उपशम, सो क्षयोपशम कहलाता है। तथा-
- क्षायोपशमिक सम्यग्दर्शन में वेदक सम्यक्त्वप्रकृति के स्पर्द्धकों को 'क्षय' और मिथ्यात्व तथा सम्यक् मिथ्यात्व प्रकृतियों के उदयाभाव को उपशम कहते हैं। प्रकृतियों के क्षय तथा उपशम को क्षयोपशम कहते हैं।

(श्री धवला पुस्तक ५, पृष्ठ २००, २११-२२१)

अध्याय १: सूत्र २२ - क्षयोपशमनिमित्तक अवधिज्ञान के भेद तथा उनके स्वामी

क्षयोपशमनिमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम ॥ २२ ॥ - क्षयोपशमनिमित्तक अवधिज्ञान का कारण

- गुणप्रत्यय अवधिज्ञान सम्यग्दर्शन, देशव्रत अथवा महाव्रत के निमित्त से होता है, तथापि वह सभी सम्यग्दृष्टि, देशव्रती या महाव्रती जीवों के नहीं होता, क्योंकि असंख्यात लोकप्रमाण सम्यक्त्व, संयमासंयम और संयमरूप परिणामों में अवधिज्ञानवरण के क्षयोपशम के कारणभूत परिणाम बहुत थोड़े होते हैं।
  [श्री जयधवला १, पृष्ठ १७]
- गुणप्रत्यय सुअवधिज्ञान सम्यग्दृष्टि जीवों के ही हो सकता है, किन्तु वह सभी सम्यग्दृष्टि जीवों के नहीं होता।

क्षयोपशमनिमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम ॥ २२ ॥ - सूत्र २१- २२ का सार

यह मानना ठीक नहीं है कि 'जिन जीवों को अवधिज्ञान हुआ हो, वे ही जीव अवधिज्ञान का उपयोग लगाकर दर्शनमोहकर्म के रजकणों की अवस्था को देखकर उस पर से यह यथार्थतया जान सकते हैं कि हमें सम्यग्दर्शन हुआ है' क्योंकि सभी सम्यग्दृष्टि जीवों को अवधिज्ञान नहीं होता, किन्तु सम्यग्दृष्टि जीवों में से बहुत थोड़े से जीवों को अवधिज्ञान होता है। अपने को 'सम्यग्दर्शन हुआ है' यदि यह अवधिज्ञान के बिना निश्चय न हो सकता होता तो जिन जीवों के अवधिज्ञान नहीं होता,

क्षयोपशमनिमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम ॥ २२ ॥ - सूत्र २१- २२ का सार

उन्हें सदा तत्सम्बन्धी शङ्का-संशय बना ही रहेगा, किन्तु निःशङ्कित्व सम्यग्दर्शन का पहिला ही आचार है; इसलिए जिन जीवों को सम्यग्दर्शन सम्बन्धी शङ्का बनी रहती है, वे जीव वास्तव में सम्यग्दृष्टि नहीं हो सकते, किन्तु मिथ्यादृष्टि होते हैं। इसलिए अवधिज्ञान का, मनःपर्ययज्ञान का तथा उनके भेदों का स्वरूप जानकर, भेदों की ओर के राग को दूर करके अभेद ज्ञानस्वरूप अपने स्वभाव की ओर उन्मुख होना चाहिए ॥२१-२२ ॥

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र २१ , २२

आगे की विषय-वस्तु....

विषय-वस्तु	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
अवधिज्ञान का वर्णन	२१	१
क्षयोपशम निमित्तक अवधिज्ञान के भेद तथा उनके स्वामी	२२	१
मन:पर्ययज्ञान के भेद	२३	१
ऋजुमति और विपुलमति में अंतर	२४	१
अवधिज्ञान और मन:पर्ययज्ञान में विशेषता	२५	१
मति , श्रुत , अवधि , मन:पर्यय , केवलज्ञान का विषय	२६-२९	४
एक जीव के एक साथ कितने ज्ञान हो सकते हैं ?	३०	१

जिनवाणी स्तुति